रात्रि क्लास 23-3-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

सदैव गुण ही ग्रहण करना चाहिए। इसको कहा जाता है गुण-ग्राहक। इसमें भी मुख्य गुण ग्रहण करना है। ऊंच ते ऊंच बाप है। वह तो मीठा लवली अक्षर है। गाडफादर कहना ठीक है। ईश्वर, प्रभु, भगवान से भी फादर अक्षर ठीक है। फादर है तो सिध है वर्षा जरूर देना होगा। रचयिता है तो नई दुनिया ही रचेंगे। नई दुनिया है यह। गाड-फादर जरूर गाड-गाडेस ही बनावेंगे। प्रवृति-मार्ग है ना। भगवान-भगवती कैसे बनाते हैं। खुद यहां आकर बनाते हैं। उन्हों को कहा जाता है देवी-देवता। गाड की रचना है इसलिए गाड, गाडेस कहा जाता है। वास्तव में होते हैं देवी-देवतायें। आदी सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन करते हैं। देवी-देवता घराने का जो ऊंच है उनको कहा जाता है महाराजा-महारानी। कहते हैं मैं तुमको राजाओं का भी राजा बनाता हूं। जिनको पवित्रता का ताज नहीं वह पतित ही ठहरे। सूर्यवंशी है डबल सिरताज पावन। बाप कहते हैं पतित महाराजाओं का भी महाराजा बनाता हूं। मुझे याद करने से तुम पावन बन लायक बनेंगे। फिर पुनर्जन्म लेते2 पतित बनते हैं। जो भी आते-जाते हैं एडीशन होते जाते हैं। मेक्सीमम और मिनीमम। 84लाख तो हो भी न सके। तो मुख्य सब से फर्स्ट क्लास चीज़ है बेहद के बाप को याद करना तो अन्त मते सो गति हो जावेगी। याद करते2 बाप के पास परमधाम पहूंच जावेंगे। भक्ति करते हैं परमधाम जाने लिए परमधाम मुक्ति को भी कहें कहेंगे तो जीवन मुक्ति को भी कहेंगे। द्वापर कलियुग को तो परमधाम नहीं कहेंगे। रावण राज्य होता है ना। परमधाम है स्वर्ग फिर त्रेता। फिर होता है रावण राज्य। बाप को कब भूलना न चाहिए। क्योंकि याद से पाप कटते हैं। बाप आते हैं ही शान्तिधाम सुखधाम बेहद का वर्षा देने। सतयुग आदि से त्रेता अन्त तक वह वर्षा चलता है। फिर लौकिक बाप से हद का वर्षा मिलता है। वहां मोह जीत होते हैं। यहां मोह रहता है। थोड़ी भी बात समझने से बेहद का सुख-शान्ति मिला था। अभी नहीं है सो फिर मिलती है। सतयुग था अभी है कलियुग। फिर सतयुग लायक बनने लिए यह संगम युग है। दो चार बातें धारण हो जाये तो भी बेरा पार है। खेवईया बागवान भी उनको कहा जाता है। वह है फूलों का बगीचा। फिर रावण कांटों का जंगल कर देते हैं। काम को जीतने से तुम 21 जन्म जगत जीत बनेंगे।

बेहद के बाप का प्यार भी बेहद का है। सभी को सुख देते हैं। सर्व की सदगति करते हैं। दुःख हर कर सुख देते हैं। तो ऐसे बाप को क्यों नहीं याद करें। यह है सहज याद सहज ज्ञान। बाकी भूल जाना चाहिए। बीती सो बीती देखो दुनिया न जीती देखो। सतयुग, त्रेता द्वापर कलियुग बीततो गई ना। सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग बीता। बाकी दुनिया के लिए कलियुग अजन नहीं बीता है। बाप कहते हैं बीती को बीती देखो पुरानी दुनिया न जीती देखो। क्या बीती है वह भी सभी बता देते हैं। सुख भी बिताया, दुःख भी बिताया। अभी फिर सुखधाम चलना है। ऊंच ते ऊंच बाप पढ़ाते हैं। बाकी रचना से वर्षा नहीं मिलता है। हद की रचना तो हद का वर्षा। बाप आकर माया रावण के गुलामगिरी से छूड़ाते हैं। इस समय सभी रावण के गुलाम हैं। फिर बाप आकर उनको छूड़ाते हैं। बाप कहते हैं मैं ने तुमको इतना सालवेन्ट विश्व का मालिक बनाया फिर वह भी कहां गवाया? नीचे उतरते2 तुम इन सालवेन्ट बन पड़े हो। 100% सालवेन्ट से 100% इन-सालवेन्ट भिखारी बन पड़े हो। फिर बाप तुमको सालवेन्ट बनाते हैं। बाप ही संगम युग पर आकर डीटी डिनायस्टी स्थापन करते हैं। सभी की सदगति करते हैं। बाकी और धर्म स्थापक तो कुछ भी नहीं जानते। वह कोई गुरु थोड़े ही है। यह तो फाल्तू बड़ाई दे दी है। वह बाप ही ज्ञान का सागर है। कृष्ण तो ज्ञान का सागर हो न सके। कृष्ण के भक्त तो कहेंगे जिधर देखता हूं कृष्ण ही कृष्ण है। कोई कहेंगे जिधर देखता हूं राम ही राम है। अंधेर नगरी...सभी में ईश्वर ही ईश्वर है। बाप कहते हैं मैं तुमको इतना ऊंच बनाता हूं माया तुमको एकदम मंकीज बना देती है। आसुरी सम्प्रदाय से हम तुमको दैवीसम्प्रदाय बनाता हूं। अभी देही-अभिमानी बनो। मुझ बाप को याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। तो मेरी मत पर चलना पड़े। अच्छा बच्चो गुड नाईट। नमस्ते।